[illegible]

मुकाम मुम्बई श्रीधर शिवला
ल ज्ञानसागर छापखाना मे
छपा चैइस १ ते से मेजनापत्र ||

शामीगर्भस्य योगभस्त्यगर्भ
स्य योरिपुः रिपुगर्भस्य योग
र्भः शमे विष्णु प्रसीदतु ||१|| प्र
थम है शामीगर्भ नाम प्राग्नि
का है || प्राग्नि शामी के गर्भ मे
प्रवेश हुई वह कथा भारत मे
प्रसिद्ध है इससे शामीगर्भ नाम
प्राग्नि का जो सिद्ध हुवा || प्राग्नि
का जो गर्भ कौन है वह है व
रुण || महादेव || तिसका पुत्र कौन
है च || तिसका पुत्र कामदेव ति
सका पुत्र कामदेव का निरुद्ध
सो विष्णु प्रसीदतु || [illegible]

[illegible]

गाते वल्कसर
तौ।
२म हैराम पोसिद्धौ
याकि या विधीप
तेसा संधरा ।।

वाल्मीकवरुणकापुत्र
भागवतमेंलिखाहै।।
वाल्मीकरामायणमेभी
बालकाण्ड प्रथमसर्गमे
वरुणकापुत्र लिखाहै।।

प्रचेताकापुत्रप्राचेतस
...
...
...वाल्मीककहतेहैं
...

2

कुपथं तं वि जानि याभ
ङ्गा विन्द रहित ता ग म
मू ॥ तं जो विन्द रहित ताग
मं कुपथं विजानि बात
माषा ॥ जो विन्द भग वा
न से रहित जो १आगम
है मार्ग तिस कुं कुपथ्य
मार्ग कहिते है मार्ग ना
ग रवो टे मार्ग जानै ॥
इस्से वा कय से वै धव सं
प्रदाय वो ईष्ट देव को
जो विन्द भगवान का मार्ग
सिद्ध हुवा इतर सद्ग
ध मार्ग सब कुं पथ है

भागवतेपंचमस्कं
धे दशमोऽध्याये
श्लोक १७ नाहं वि
शंके सुरराजवज्रा
न्न त्र्यक्षशूलान्न य
मस्य दण्डात् नाग्न्य
र्कसोमानिलवि
त्तपालाच्छंके भृशं
ब्रह्मकुलाऽवमान
त् ।। १७ ।। इस वाक्य से
और सबके अस्त्रश
स्त्र से भय माना विष्णु
के सुदर्शन चक्र को

नाम नीति प्रायाद्दुसे सिद्ध होगया के छुंद श्रीनंदकेसे भयकर तांहुंयह सिद्ध हुवा

सर्वं रजसामइति प्रवृत्ते ऽहंसा सौ ऽर्कः परः प्रक्रमः एकोद्हास्यधृतेस्थि स्यादपि तिवि रंचि तरे ति संज्ञा पोयांति तत्ररव लु सावृत्त नोर्त्तरां स्तः॥ प्रथमकेंधेटी का॥ सवतनो बस देवा र्त्तणां श्रेयांसि सः इत रस्मा रने॥

इत्युदात्तो नाम गताबंध

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ॐ गच्छन्ति सत्पुरुषा
मध्येति छेति राजसः ।
जघन्य गुणवृत्ति
स्था: प्रधो गच्छन्ति
मसा: ॥१॥ भगवद्गीता
पाठ छंडसे कमः प्रज्ञुन
प्रति ॥ इस बाक्य से गीता
पाठ ऊर्द्ध गति को प्राप्त होते
है

दृष्टि नेत्र लोचन दृग्
नैपन ताक वे हाथ दिली
ति हस्ता पद: ॥८॥ नेत्रों
को नाम हथ्य लाभो
मानने

यंशैवा समुपासते शिव
इति ब्रह्मेति वेदान्ति
नो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण
पटवः कर्तेति नैयायिकाः
अर्हन्नित्यथ जैनशासन
रताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु
वांछितं फलं त्रैलोक्यना
थो हरिः ॥१॥ अर्थः यं श
शैवाः शिव इति समुपास
ते॥ वेदान्तिनः ब्रह्म इति उपा
सते॥ बौद्धा बुद्धः इति सम्प्रसे
वं तो फवं मतिः उद्धः प्रमाणपट
वः प्रमाणेषु चतुराः॥ नैयायि

का कर्ता एव ईश्वरः इत्येवं स
मुपासते ।। जैन शासन नि
रता: अर्हन् इति यं समु
पासते ।। अर्हन् संज्ञक देव
ता की जैन हमारे राम
कृष्ण जी हैं ते से ही जैन
वालों के अर्हन् देव हैं उस
की उपासना करते हैं ।।
मीमांसकाः कर्मेत्यपरे ।।
कर्म जोह सोइ ईश्वर है ऐसे
मानते हैं ।। सऽयं त्रैलोक्यना
थो हरिः सोऽस्माकं वांछि
त फल विदधातु करे है ।।

5 विकल्पं भूयं वस ते उत्पाद्य इत्यति
तिविन लीन संनार

भा॰ एक॰ प्र॰ को चिह्नि कल्प वस्तना प्राप्
त सो न मा ता नः दैन मन्ये परे का
स्यान गपरे वेग मू कृषी गतो धातु से
कृषि ऋषि उरुवृद्धं कृषी विकृ है कृषि ति

कृषि त्वं नाम किं दर्शनात्तप
श्यत्य सौ सूक्ष्मानु प्रश्नो नु
इति कृषि:॥ कृषी ग
तो धातु से॥ कृषि वेत्ति
वेदादौ इस्य मरः॥ ह्रस्व है कृषि शब्द
ऋषिवत्॥

संकल्प त्वं नाम किं संक
ल्पनं संकल्प: मनसो
व्यापार:॥

6

9

10

ब्राह्मण संख्या॥ छा.दो
१ पब्राह्मण १ देवत ब्रा
ह्मण २ पड्विंश ब्राह्मण
३॥ शत पथ ४॥ गो पथ
५ ऐतरेय ब्राह्मण॥

ऊपर के तीन ब्राह्मण

तौ धर्म शास्त्र के
कर्म काण्ड के है

और स्तन नोपा पन
१ ग्राश्वलायन ग्रह
रि ने पत्नी कर्म का
विषय के है॥

कर्मणां काण्डः
काण्डे कर्म समूह कथ्यते॥

स्पर्शसिद्ध्यंगो मो श्रीहाः ९ ना०है

प॰ [redacted] स्पर्श म

वी ते है जो नामप ध्वी को है

हि [redacted] गर्ध

सो पंह को चित्त प्रते है

है॥ नीति ज्ञो:॥ स्ट गतो धा

ऱु से स्पर्श होता है॥ स्पर

र्षा का ऐति स्पर्श: सवृत्ति।

और यत्ति क माणी लो के निति स्पर्श॥

वे स्वे क्रू ७ अंद्रु है॥ सिद्धावा-

नीय ॥१॥ कल्पशब्द

कोन से है ७ प्रास्व लापना।

दि ७ प्रा ध्व लाप न को त॥

ट घ स्ट न॥ ७ प्रावसाव

स्ट न॥ वात्स्याव न स्ट ग॥

का ... पक कल्प

ध्रुव है॥ व्याकरण ३॥ नि रु

क्त को ५ २ ७ प्र च न व है वैदिक

५

जो प्रा की है ॥ छन्द पिङ्गल
को कहते हैं पिङ्गल लक्षण
११) को मत है जिसमे उप
जाति ॥ शिखरणी प्रभृति छ
न्द शीघ्र आजाते है की रीति है ॥
ज्योतिष ॥ ६ ॥ षट्‌ पट प्रश्न है

षट् शास्त्र पक्ष है ॥ वेदान्त
उपनिषदादि ॥ गीता ब्र
ह्म मीमांसा उत्तर मीमांसा
एक ब्रह्म पक्ष है एक ब्र
ह्म को मानते है ॥ १ ॥ सांख्य
पक्ष एक ही शास्त्र है कपि
ल देव जी कृत सांख्य सू
त्र को कापिल सूत्र कह
ते हैं ॥ ... सांख्य
मानते है ॥ ... योग शास्त्र ५

प्रमादात्कुर्वतां कर्म
प्रच्यवेताऽध्वरेषु
यत् स्मरणादेव तद्वि
ष्णोः सम्पूर्णं स्यादि
ति श्रुतिः ॥ प्रर्थ०
प्रमादात्कुर्वतां कर्म ॥
यत्रैः प्रध्वरेषु अ
ध्वरेषु प्रच्यवेत तद्
विष्णोः स्मरणादेव सं
पूर्णः स्यात् इति श्रुतिः ॥
भाषा प्रमाद से कृत कार
ज्यो जो कर्म हैं और
जो प्रध्वर नाम यज्ञ
का है यज्ञ के बीच जो

प्रच्यवेत नाम च्युत हैं तत् सो च्युतता सम्
होता को प्राप्त होवे ॥१॥

गिन्दुपदकाअर्थ॥ हिंदुको कहते हैं हिंलोम दमते र्हति इति हिन्दुः हि नाम लोमका हीन्दो ग्रंथ ओलगमें लिखा है लौमो की ओर हो कर दुईगर होने धातुसे दमते प्रयोग है॥ लोम ओ वालहरति है की ओर होकर उसका नाम हिन्दू है इससे होता वह हिन्दु श्रेष्ठ हो गये और हिन्दु भी संतान भी इसको कहते है॥ हरि स्वर्पः॥ इन्दुम्नः तलोपे नानः हरिन्दु संतनः॥ इससे सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजाओंकी संतानका नाम हरिन्दु संतानहै॥ हिन्दुः जान मामामें कहते हैं अलमू॥